सं. भो. वि./हिसार/ 45-86/33771.— चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि (1) प्रबन्धक निदेशक, हरियाणा राज्य माईनर सिंचाई ट्यूबबैल कारपोरेशन, चण्डीगढ़, (2) हरियाणा राज्य माईनर सिंचाई ट्यूबबैल कारपोरेशन फतेहाबाद (हिसार), के श्रमिक श्री कर्म चन्द पुत्र श्री दुनी चन्द मार्फत मजदूर एकता यूनियन नागोरी गेट हिसार, तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रौद्योगिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, श्रव, श्रौद्योगिक विवाद ग्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई गिक्तियों का प्रयोग करते हुये हिर्पाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी श्रधिसूचना सं. 9641-1-श्रम-78/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ गठित सरकारी श्रधिनियम की धारा 7 के श्रधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिग्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत श्रयवा सम्बन्धित मामला है:—-

क्या श्री कमं चन्द की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं. मो. वि./हिसार/54-86/33779.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि (1) निदेशक प्रबन्धक, हरियाणा राज्य माईनर सिचाई ट्यूबबैल कारपोरेशन, फलेहाबाद, जिं हिसार, के श्रमिक श्री प्रीतम सिंह, पुत्र श्री उत्तम सिंह, मार्फत मजदूर एकता यूनियन नागोरी गेट, हिसार, तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीधोगिक विवाद है;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिए, श्रव, श्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये हिरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं. 9641—1—श्रम-78/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ गठित सरकारी ग्रिधिनियम की धारा 7 के ग्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री प्रीतम सिंह की सेवाश्रों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?

सं. मो. वि./हिसार/27-86/33787.—चुंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि (1) निदेशक प्रबन्धक, हरियाणा राज्य माईनर सिंचाई ट्यूबबैल कारपोरेशन, चण्डीगढ़, (2) हरियाणा राज्य माईनर सिंचाई ट्यूबबैल कारपोरेशन, फतेहाबाद (हिसार), के श्रमिक श्री बलवन्त राम पुत्र श्री राजा राम, मार्फत मजदूर एकता यनियन. नागोरी गेट हिसार, तथा उसके प्रबन्धकों के बीच इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीद्योगिक विवाद है:

मीर च्कि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिये, अब, श्रौद्योगिक विवाद ग्रिधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिधिसूचना सं. 9641-1-श्रम-78/32573, दिनांक 6 नवम्बर, 1970 के साथ गठित सरकारी श्रिधिनियम की धारा 7 के श्रिधीन गठित श्रम न्यायालय, रोहतक को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा अभिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या उक्त विवाद से सुसंगत श्रग्या सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री बलवन्त राम की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो यह किस राहत का हकदार है ?

## दिनांक 27 ग्रगस्त, 1987

सं० ग्रो॰ वि० ग्रम्वाला/79-87/33960.—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि (1) सचिव, हरियाणा राज्य बिजली वोर्ड, प्रम्बाला शहर,

ैं अभिक श्री बीजन्त सिंह, पूर्व सरदार करनैल सिंह, गांव ा गरोली नजदीक छछरोली, पहसील शाधरी, (ग्रम्शाला) तथा उसके प्रजन्मकों है मध्य इसमें सिक्के आद लिखित मामले में कोई औद्योगिक विजाद है ;

भौर चुंकि इरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेत् निर्दिष्ट करना बारुनीय समझते 🗧 ;

्सलिये, अब, ग्रोडोगिक विधाद ग्रधिनियम, 1947 नी धारा 10 की उपधारा (1) के राष्ट्र (ग) द्वारा प्रदान की गर्ट शिक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल असे आसे सरकारी श्रीक्षकृतना संव 3(11) 84-3 थन, दिनांक 18 अप्रैल, 1984 हारा उन्त ग्रधिसूचना की धारा 7 के ग्रधीन गठित अम न्यायल्य, प्रम्याला को विधादयस्त या उममे संवन्धित नीचे लिक्ता मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु धिनिर्दिष्ट करते हैं जो कि उन्तर प्रवन्धकों तथा अमिक के बीच या तो विधादग्रस्त मामला है या विधाद से सुसंगत ग्रथदा संबंधित मामला है :---

क्या श्री बिजन्त सिंह की सेवा समाप्ति/छंटनी न्यायोचित तथा ठीक हैं ? यदि नहीं, तो यह जिस राहत का हड़दार है ? संग्री विश्वेषमुना/4-87/33967. --चूंकि हरियाणा जे राज्यपाल की राथ है कि मैं। (१) स्थित, हरियाणा राज्य बिजली बोर्ड, जण्डीगढ़ (2) चीफ इंजीनियर हाईडल प्रोजेक्ट, हरियाणा राज्य बिजली बोर्ड, गोबिन्चपुरी, यमनानगर, के श्रीक श्री रमेंग चन्द, पुत्र श्री सिरीराम मार्फत सुरेन्द्र कुमार धर्मा, महा मन्द्री, मैंटा वर्कस पुनियन (उन्ह्रज), श्राह्मण धर्मशाला, रेलवे रोड़, जगाधरी तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखिन मामले में कोड़ श्रीछोगिक विवाद है;

ग्रौर अकि हरियाणा के राज्यपाल इस निदाद को न्यायनिर्णय हेतु निदिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिये, ग्रन्न, श्रीश्रीमिक विवाद श्रिष्टित्यम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के छण्य (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुये हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा संस्कारी श्रिष्टसूचना संच 3/41) 84-3 म, दिनांक 18 ग्रप्रैं ल, 1984 द्वारा उन्त प्रिष्टसूचना की धारा 7 के ग्रधीन गठित श्रम न्यायालय, ग्रम्बाला को दिवादग्रस्त या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायितर्णय एवं पंचाद तीन मास में देने हेतु निविष्ट करते हैं जो कि उन्त प्रदन्धनी तथा श्रमिणीं के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है:—

क्या श्री रमें जन्द की सेवाम्रों का समापन/छांटी न्यायोखित तथा ठीक है ? यदि नही, तो दह किस राहत का हकदार है ?

## दिनांक 31 ग्रगस्त 1987

संव श्रोव विव/एफव्यीव/गृहगाव/119-87/34404.—चूंकि हरियाणा ै राज्यपाल भी राय है कि (1) कुलपति हरियाणा इति विश्व विद्यालय, हि गर (2) क्षेत्रीय निदेशक, हरियाणा इवि विश्व विद्यालय (अपि कार्स), बन्बन, जिला महेन्द्रयः है अभिक श्रो क्व उन्द, पुत श्री श्रीसा राम मार्फत महा सचिव, मजदूर यूनियन, हरियाणा इपि विश्व विद्यालय बावल, जिला महेन्द्रगढ़ तथा उसके प्रवन्धकों के बीच इसमें इसके बाद निवित मामने के सम्बन्ध में भोई प्रौद्योगिक विवाद है;

भौर चुँकि इरियाणा के राज्यपाल दिवाद को न्यायनिर्णय हैं हे निर्दिष्ट करना बंधिनीय समक्षते हैं ;

इसलिये, अब, श्रीक्षोगित विवाद प्रधितियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) े खण्ड (घ) इरा प्रदान ही गई ग्रावितयों का प्रयोग करने हुवे हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा उक्त ग्राधितियम भी धारा 7-ज है अधीन गठिन श्रीक्षोगिक अधिकरण हरियाणा फरीदाजाद ी नीचे विनिद्धित मामले जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा धमिलों के बीच या तो विवादश्क्त मामला/मामले हैं भयवा विवाद से मुसंगत या सम्मन्तिन मामला/मामले हैं न्यायतिर्णय एवं पंचाद तीन मास में देने हेंतु निर्दिष्ट करते हैं:—

क्या की को बन्द की मेदाशों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो दह किस राहत का हाज्यार है ?

## दिनांक 8 सितम्बर, 1987

सं. भ्रो. वि.  $\ln 6 \sqrt{3} \sqrt{100-87/35399}$ . — चूं कि ्रियाणा के राज्यपान की राध् है कि मक्स्वी भ्राटो इष्यस्ट्रीय,  $1\frac{5}{4}$  2 तथा 3 एमक्स् मक्स्विक, लाट न्यू टाउन शिय, फरीदाबाद, के श्रीमक श्री भ्रेम नारायण, पुत्र श्री राम जताबन मार्फल फरीदाबाद, कामगार प्रतियन,  $2\sqrt{3}$ , गोपी कालोनी, श्रोतः फरीदाबाद तथा उसके प्र राजों के मध्य इसमें इसके बाद निधित मामने में कोई प्रीत्योगिक विधाद है;

ग्रीर वृद्धि इरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को स्यायनिर्णय हेतु निदिष्ट जरना वांफ्रनीय समझते है;

दसीं तर, प्रव, श्रीद्योंकि: ित्र प्रथितियम, 1947 की धारा 1व ाते उपधारा (१) के उण्ड (प्र) ज्ञारा श्रवान की गई श्रीक्षों भा प्रवीग करते पुष्ट हुरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा उत्त प्रधितियम के प्राप्त ? अपने स्थीन गठित स्रोद्योगिक श्रधिकरण, हरियाणा, फरीदाबाद को नीचे विनिर्दिष्ट मामले जो कि उक्त प्रवन्धकों तथा श्रमिकों के बीच या तो विवादग्रस्त मामला/मामले हैं अथवा विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला/मामले हैं न्यायनिर्णय एवं पंचाट 3 मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं :---

क्या श्री प्रेम नारायण की सेवा समाप्त की गई है या उसने स्वयं ही कार्य से अनुपस्थित हो कर नौकरी छोड़ी है ? इस बिन्दुपर निर्णय के फलस्वरूप वह किस राहत का हकदार है ?

सं. ग्रो. वि./यमुना 83-87/35406.—चं कि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं व ग्रजीजपुरकला को-ग्रोप्रेटिव केडिट एंड सिवस सोसाईटी लिव, ग्रजीजपुरकलां, तहसील जगाधरी, जिला ग्रम्बाला के श्रमिक श्री सुरेश पाल, पुत्र श्री रामेश्वर दास मार्फत श्री बलबीर सिंह, एडवोकेट, 126, लेबर कालोनी, यमुनानगर तथा प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई ग्रोद्योगिक विवाद है;

भ्रौर र्चूिक हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को त्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते है ;

इसलिए, अब औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उप-धारा (1) के खंड (ग) द्वारा प्रवान की गई मिक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 3(44)84-3 अम, दिनांक 18 अप्रैल, 1984 द्वारा उक्त अधिसूचना की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, अम्बाला को विवादअस्त या उससे सम्बन्धित नीचें लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जोकि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विवादअस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है:---

क्या श्री सुरेश पाल की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक हैं ? यदि नहीं, तो वह किस रा**हत** का हकदार है ?

सं० भी वि./एफ. ही. / 186-87/35412. — चूं कि हरियाणा के राज्यपाल की राय हैं कि मैं० साई प्रशान्ति प्रा० लि०, मथुरा रोड़ फरीदावाद, के श्रीमक श्री जय प्रकाश, पुत्र श्री चन्दन लाल, गांव ईतमादपुर, डा० तिलपत, तहसील बल्लबगढ़, जिला फरीदाबाद तथा प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई श्रोद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसलिए, ग्रब, ग्रीद्योगिक विवाद श्रधिनियम, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इस के द्वारा उक्त ग्रिधिनियम की धारा 7 क के ग्रधीन गठित ग्राँद्योगिक ग्रिधिकरण, हरियाणा, फरीदाबाद, को नीचे विनिर्दिष्ट मामले जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिकों के बीच या तो विवादग्रस्त मामला/मामले हैं ग्रथवा विवाद से सुसंगत या सम्बन्धित मामला/मामले हैं न्यायनिर्णय एवं पंचाट 3 मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं :—

क्या श्री जय प्रकाश की सेवा समाप्त की गई है या उसने स्वयं ही गैर-हाजिर रह कर नौकरी से पूर्नग्रहणाधिकार (लियन) खोया है ? इस बिन्दु पर निर्णय के फलस्वरूप वह किस राहत का हकदार है।

सं० ग्रो० वि०/एफ०डी ०/81-87/35419.--चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं ० थामसन प्रेस, इण्डिया लि०, मथुरा रोड़, फरीदाबाद, के श्रमिक श्री विनय कुमार, पुत्र श्री कालू राम, मार्फत हिन्द मजदूर सभा, 29, शहीद चौक, फरीदाबाद तथा प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले के सम्बन्ध में कोई ग्रीधोमिक विवाद है;

भौर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल इस विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिये, अब, श्रीद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (घ) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुवे हरियाणा के राज्यताल इस के द्वारा उक्त प्रधिनियम की धारा 7-क के श्रधीन गठित श्रीद्योगिक श्रविकरण, हरियाणा, फरोताबाद की नोबे विनिर्दिष्ट मामला जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिकों के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है श्रवता विवाद से सुमंगत या संबंध्यित मामला है स्थायनिर्णय एवं पंचाट 3 माम में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं :---

स्या श्री विनय कुमार की सेवाओं का समापन न्यायौचित तथा ठीक है ? यदि वहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ? ग्रार. एस. ग्रग्नवाल, उप सचिव, हरियाणा सरकार, अम विभाग।